

**अनुराग
हेल्प केयर प्रा.लि.**
•ICU •NICU DIALYSIS
•MODULAR OT
दूखीन मिथि
से आपश्वान काड़ मात्रा
सीजीएस, डेकोम व आयुष्मान काड़ मात्रा
117/क्ष्यू/702,
शाहरा नार, कानपुर
9889536233, 7880306999

न्यूज ब्रीफ

**मेडिकल कालेज में भर्ती
लावारिस मरीज की मौत**

तिर्वा मेडिकल कालेज में भर्ती लावारिस मरीज की इलाज के दैरान मौत हो गई। सोमवार की रात बाबा सहेज भीमराव रामार्या अंग्रेज़कर राजकीय मेडिकल में पुलिस द्वारा एक मरीज को भर्ती कराया गया था। उसका इमज़ेरी में इलाज किया जा रहा था। इलाज के दैरान उसकी मौत हो गई। सोमवार की रात बाबा सहेज भीमराव रामार्या अंग्रेज़कर राजकीय मेडिकल में पुलिस द्वारा एक मरीज को भर्ती कराया गया था। उसका इमज़ेरी में इलाज किया जा रहा था। इलाज के दैरान उसकी मौत हो गई।

**मिस्ट्री ने लगाया मजदूरी
न देने का आरोप**

गुरसहयोगज, कन्नौज। मजदूरी का पैसा मार्गन पर रेलवे के ठेकेदार ने मिस्ट्री से जारी सुरक्षक अभद्रता की। नाप व हिसाब लिखी डायरी भी छीन ली। पीछे ने कोटेकर के दिवार्द कोतवाली पुलिस को प्रार्थना पूर देकर कार्रवाई की मांग की है। मंगलवार को ग्राम रजलामुक निवासी गोरक्ष जाटव पुर रवि बहु जाटव ने बाबा की किया कि उसने गुरसहयोगज के लिए रेस्टेन पर ठेकेदार व घैट के कहने पर टायल, पथर लागान का कार्य ठेका पर किया था। जिसकी 1,22000 रुपये की मजदूरी का पैसा बाका यहै। उसने जब अपनी मजदूरी का कार्य ठेका की ओर नाप व हिसाब लिखी डायरी भी छीन ली। फोन करने पर कोई जबाब भी नहीं मिल रहा है। कोतवाली पुलिस ने मार्गन की जांच शुरू कर दी है।

**विवाद में रामपीट
कर किया धायल**

गुरसहयोगज, कन्नौज। बचों के विवाद के चलते धर के दरवाजे पर बैठी हुई लालिका को गाली लिखी डायरी भी छीन ली। फोन करने पर कोई जबाब भी नहीं मिल रहा है। कोतवाली पुलिस ने मार्गन की जांच शुरू कर दी है।

**अदैव कब्जों पर
सख्ती के निर्देश**

छिवरामऊ। मंगलवार को उपजिला अधिकारी (एसटीएम) खाँड़े दिवेरी और तहसीलदार अशीष कुमार सिंह की अध्यक्षता में लेखालालो, राजर निरीक्षकों और नायब तहसीलदारों की बैठक आयोजित हुई। एसटीएम ने वरासत, आय, जाति प्रमाण पत्र जैसे मामलों के सम्बद्ध और डिफॉल्ट मुक्त करने के निर्देश दिया। साथ ही, ग्राम समाज की धूमधारी पर अदैव कब्जों को तत्काल हटाने का आदेश जारी किया। उन्होंने खप्त किया कि किंतु भी रिश्ति में अवैध कब्जे वर्द्धित नहीं होंगे। कठाना न हटाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी।

प्रेशानी

अब तक 110 विंटल मक्का की हो सकी खरीद, बाजरा शून्य, एक नवंबर से धान की होनी है खरीद

ई पॉस मशीनें सरकारी मक्का, बाजरा खरीद में बनी बाधक

कार्यालय संवाददाता कन्नौज

अमृत विचार। मक्का, बाजरा की सरकारी खरीद में ई पॉस मशीन बाधा बनी है। मशीन के आई इंप्रेशन (आंख की छवि) न लेने से खरीद नहीं हो पा रही है। इससे किसानों को बिना फसल बेचे लैटान पड़ रहा है।

सरकारी क्रांति केंद्रों पर इस बार ई पॉस मशीन से किसानों के अनाज मक्का व बाजरा की खरीद की जायेगी। इसके लिये जिले के सभी सरकारी खरीद केंद्रों पर ई पॉस मशीनें उपलब्ध कराई गई हैं।



मण्डी समिति के सरकारी केंद्र पर रखी ई पॉस मशीन, यौजूद केंद्र प्रभारी अरविंद कुमार।

मशीन चालू भी नहीं हो पा रही है। मशीन की आई इंप्रेशन (आंख की छवि) न लेने से खरीद नहीं हो पा रही है। खास बात तो यह है कि मशीन केंद्र प्रभारी की आंख को भी नहीं ले रही है। इससे

बारिश से मक्का, बाजरा व धान हुई नम

कन्नौज। लगातार दो दिन से बारिश होने की धर के अंदर रखी मक्का, बाजरा व धान नम हो गई है। इससे मौसम खुलने के बाद ही किसान खरीद केंद्रों पर अनाज लेकर पहुंचे। यदि अनाज नम रहा तो क्रय केंद्रों पर लगी नीचे जांचों की मशीन से जांच की जायेगी। यदि नमी निकली तो किसानों को अनाज सुखा कर लाने को कहा जायेगा। इससे किसान मक्का, बाजरा व धान की ठीक तरह से सुखाने के बाद ही केंद्रों पर ले कर जायेगा।

खरीद ई पॉस मशीनें बदली जायेंगी

कन्नौज। जिला खाद्य एवं विपणन अधिकारी अनुप कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि जिले में खुले सभी सरकारी क्रय केंद्रों से उनके पास शिकायतें आ रही हैं कि मशीन काम नहीं कर रही है। इस पर उच्च अधिकारीयों को जानकारी दी गई है। निर्णय लिया गया कि जिले के सभी केंद्रों की ई पॉस मशीनों को बदला जायेगा।

मैं अंगूठा लगाने की व्यवस्था के बजाय केंद्रों पर आई से स्थापन किया जाना है। मशीन को चालू करने के लिये सबसे पहले केंद्र प्रभारी अपनी आंख स्कैन कराकर स्थापन करेगा। यदि मशीन खुली

तो फिर किसान का सत्यापन भी इसी

की जा सकी। बाजार में मक्का का तरह से आंख से किया जायेगा। एक भाव 1900 से 2000 रुपये प्रति अक्टूबर से 31 दिसंबर तक मक्का

विंटल का होने से किसान सरकारी व बाजरा की खरीद की जानी है। पूरा क्रय केंद्रों पर मक्का बेचना चाह रहा

अक्टूबर गुरुरे को है पर अभी तक है पर ई पॉस मशीन की खरीद चलते निराश है।

रिमझिम बारिश से टूटे तार दो दिन गुल रही बिजली

कार्यालय संवाददाता कन्नौज

अमृत विचार। बारिश ने दो दिनों से बिजली गुल कर दी। इससे लोगों को अंधेरे में रात गुजारनी पड़ी। बिजली न पिलने से लोगों को पीने के पानी की भी दिक्कत हुई।

दो दिनों से हो रही रिमझिम बारिश ने जिले की बिजली व्यवस्था को पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया। कहीं तार टूट गये तो कही मामूली फाल्ट आने से बिजली गुल रही।

बारिश के चलते लाइनमैन भी सुधार करने नहीं गये। जिला मुख्यालय के निकट तो लाइनमैन सुधार करते रहे पर दूरदराज गांव में फाल्ट होने की जानकारी देने के बाद भी नहीं पहुंचे।

इससे दो दिनों से खाली स्मिरिया, और उम्दा, इंद्रगढ़, जयसोदा,

बारिश से अहमदपुर रौनी में टूटा बिजली कातार अमृत विचार

में भूखालय के आसपास लगे रहे लाइनमैन, देहात का हाल रहा खराब

है। खाली समस्या तो लोगों के सम्मने पानी की रही। बिजली न आने से टूटकों से भी स्पलाई नहीं दी गयी। खाली वात तो यह रही कि उपकेंद्र पर ग्रामीणों के फोन आने रहे पर यह कह दिया जाता कि लाइनमैन फाल्ट ठीक करने के लिये नहीं दी जाएगी। खाली वात में फाल्ट करने के लिये गहरे हैं। घंटों बीतने के बाद भी लाइनमैन मोके पर नहीं पहुंचे। वहीं विभाग का मानना रहा कि लाइनमैन सर्वों का होने से लोगों को बिजली की अधिक जरूरत नहीं रही

www.amritvichar.com

पर भी खबरें पढ़ें

खेतों में नमी हुई अधिक, आलू की बुआई प्रभावित

कन्नौज। दो दिन से हो रही बारिश ने किसानों को धरों में कैद कर दिया है। आलू की बुआई भी पूरी तरह के बंद हो गई है। बिंगड़ मौसम से किसानों को चिंता सताने लगी है।

बारिश ने किसानों के काम को बंद कर दिया है। कोल्ड स्टोरेज से आलू निकाल कर लाये किसानों का आलू धरों में पढ़ा है। किसान अब मौसम खुलने का इंतजार करने लगे हैं। खेतों में नमी अधिक रहे गई है। किसानों का कहना है कि बारिश में यदि वह आलू की बुआई करते हैं तो अधिक बारिश होने पर आलू सड़ने की संभावना बन सकती है। यही हाल धान का हाल धान भी गहरे हैं। खेत में कटी पड़ा धान भी गहरे हैं। इसे निकालने का समय बारिश नहीं दे रही है। आलू की बुआई होने के बाद किसान गोंद की बुआई करता है। आलू सड़ने की संभावना नहीं है।

बारिश ने किसानों के काम को बंद कर दिया है। कोल्ड स्टोरेज से आलू निकाल कर लाये किसानों का आलू धरों में पढ़ा है। किसान अब मौसम खुलने का इंतजार करने लगे हैं। खेतों में नमी अधिक रहे गई है। किसानों का कहना है कि बारिश में यदि वह आलू की बुआई होने के बाद किसान गोंद की बुआई करता है तो अधिक बारिश होने की संभावना बन सकती है। यही हाल धान का हाल धान भी गहरे हैं। खेत में कटी पड़ा धान भी गहरे हैं। इसे निकालने का समय बारिश नहीं दे रही है। आलू की बुआई होने के बाद किसान गोंद की बुआई करता है। आलू सड़ने की संभावना नहीं है।

बारिश से अहमदपुर रौनी में टूटा बिजली अमृत विचार

है। खाली समस्या तो लोगों के सम्मने पानी की रही। बिजली न आने से टूटकों से भी स्पलाई नहीं दी गयी। याली वात तो

न्यूज ब्रीफ

22 महिलाओंने
कराई नसबंदी

महेवा। खानायी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर मंगलवार को नवबंदी शिरिक का आयोजन किया गया। जिसमें कृशल सर्जन एवं चिकित्सकों की देखरेख में लाभग्र दो दर्शक महिलाओंने नवबंदी की गई एवं उन्हें सुकृशल अस्पताल श्रान्त द्वारा उनके घर पहुंचाया गया। योग्यतारी अधिकारक डॉ गोवर्धन प्रियांती ने बताया कि सीएसी पर आयोजित कैपें क्यून 22 महिलाओंने नवबंदी सर्जन डॉ मंगल रिहंड की देखरेख में की गई। इसे दीरान स्थानीय अस्पताल प्रशासन से डॉ गोवर्धन प्रियांती अधिकारक, एआरओ नम्बे नारायण, एनएम अर्चना, सरोज गोतम, आशा कार्यकारी पाणी, सुनीता काउसलर अनुपमा गुप्ता आदि रखी।

बंदी की बिंगड़ी तबियत जिला अस्पताल में भौत

इटावा। गांव महाला शिथ लैट्री कारगार में थोक्खाड़ी के मालिम में बंद बंदी की तबियत बिंगड़े पर उसे उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया गया। वहां पर उपचार के दीरान उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार कंदीय कारगार महोला में बंदी स्थाप्ताल 45 वर्ष विवाहित एक फैरीजांडी की तबियत बिंगड़े पर जेल वार्डन राम मनोहर देले द्वारा बंदी को उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया गया। वहां पर उपचार के दीरान उसकी मौत हो गई।

महिला के अधिकारों की नहीं हो सकी शिनाख्त

अमृत विचार
Follow UP

संवाददाता, मौद्दा

हमीरपुर डीबीए के लिए मतदान आज हमीरपुर। हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के बुधवार को लेकर सरायीं तजह हो गई है। विभिन्न पर्दों पर किसित आजमा रहे प्रयाणीय मतदानों को तुम्हारे और उन्हें अपने पक्ष में मतदान करने का हर संभव जलन कर रहे हैं। बुधवार की सुबह मतदान शुरू हो गई है। इसके बाद एसोसिएशन के सामाजिक निवारण के लिए बुधवार की बाद देर शाम तक मतदानों के बाद परियाम धोषित कर दिया जायगा। एडर्डस कमेटी के घेरेरपैन जयकरन सिंह ने यह जनकारी देते हुए बताया कि हमीरपुर डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन के सामाजिक निवारण के 4 बजे तक मतदान होगा। इसके बाद शाम 5 बजे से मतदान प्रारम्भ हो जाएगा। निवारण कार्य मुख्य निवारण अधिकारी अलाक झुसेन की निगरानी में कराया जाएगा। उनके साथ सहायता निवारण अधिकारी वेसिंह यादव, महिला प्राप्तिपति, विष्णु देवीटी और दीपक चक्रवर्ती मतदान और मतदान की प्रक्रिया पूरी करायेंगे।



रंगोली



फिल्म निर्माता मुजफ्फर अली की फिल्म उम्राव जान के एक गीत को अक्सर लोगों को युनगुनाते हुए सुना जाता है। दिल चीज़ क्या है आप मेरी जान लीजिए, दीवार-ओ-दर को गौर से पहचान लीजिए। इसके सुर, लय और ताल के साथ ही दिल में स्पंदन और मानस पटल पर कई तस्वीरें एक साथ उभरती हैं। फिल्म में उस दीवार और दर का संबंध कहां से है यह अलग बात है, लेकिन अयोध्या (तत्कालीन फैजाबाद) से इस दीवार और दर का गहरा नाता है। फिल्म के कई सीन फैजाबाद में पूरब का ताजमहल कहे जाने वाले बहू बेगम के मकबरे की बारादरी में शूट किए गए थे। उम्मत-उज़-ज़ोहरा 'बहू बेगम' अवध के नवाब शुजाउद्दौला की पत्नी थीं। यह मकबरा बहू बेगम ने ही बनवाया था। वर्तमान में यह ऐतिहासिक इमारत क्षण के दौर से गुजर रही है। खंडहर में बदल रही है। अवैध कब्जे हो रहे हैं। कहने के लिए यह पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है, लेकिन स्थिति ठीक नहीं है। कभी यह तत्कालीन फैजाबाद की शान थी। -राजेंद्र कुमार पांडेय

बदहाल हो रहा 'पूरब का नामहल'



बहू बेगम मकबरा का निर्माण

पूरब के ताज महल कहे जाने वाले बहू बेगम मकबरा का निर्माण अवध के तीसरे नवाब शुजाउद्दौला (जन्म 19 जनवरी 1732, मृत्यु 26 जनवरी 1775) ने ईस्ट इंडिया कंपनी से 22-23 अक्टूबर 1764 को लडाई हारने, फैजाबाद की अपनी राजधानी बनाने और अकाल के दौर में लोगों को काम देने के लिए अपनी पत्नी उम्मत-उज़-ज़ोहरा (जिन्हें बाब में बहू बेगम के नाम से जाना गया) के लिए शुरू कराया था। यह गैर-मुस्लिम वास्तु कला का उत्कृष्ट मन्मूह है। जनकार कहते हैं कि इसमें ईरान से आए कार्सीगर और सामानों के साथ देशी मजदूरों और सामान का प्रयोग किया गया। हालांकि नवाब इसे पूरा नहीं करा पाए। जिम्मेदारी उनके बेटे असफूद्दौला के पास आई, लेकिन लखनऊ को राजधानी बनाने के बाद उसने इसे इसके हाल पर छोड़ दिया, तो बहू बेगम ने निर्माण को आगे बढ़ाया। निर्माण के दौरान ही उनकी भी मौत हो गई, लेकिन उन्होंने इसके लिए धनराशि की व्यवस्था पहले से कर रखी थी। इसी से उनके खास सिपहालालर द्वारा अपनी खान ने 42 मीटर ऊंचे मकबरे का निर्माण पूरा कराया, जहाँ से पूरे शहर को देखा जा सकता है। शहर के मौलाना जफर अब्बास कुम्ही बताते हैं कि बहू बेगम मकबरे के साथ की इमारतें नवाबी शान-ओ-शौका का बोडे-डम्भा हैं। इसके निर्माण में घार सौ मजदूर आठ साल तक लगातार लगे रहे। नवाबी काल में पूरब के ताजमहल के साथ व्यवस्थित शहर बनाने के लिए कई निर्माण कराए गए। इनमें गुलाबबाड़ी के साथ चौक की ऐतिहासिक घंटाघर सहित इकड़े और तीन दरे हैं। चौक में ही सेकड़ों साल पुरानी मस्जिद हसन रजा खां भी है।



उत्तराखण्ड का रंगमंच अपने ही रंगों की तलाश में

उत्तराखण्ड की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के साथ रंगकर्म की स्थिति उतनी ही चुनौतीपूर्ण है। यथेटर की दुनिया में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर पहचान बनाने वाले वरिष्ठ अभिनेता एवं रंगकर्मी श्रीश डोभाल कहते हैं कि प्रदेश में रंगकर्म आज भी प्रोत्साहन और विजयन के अभाव में पिछ़ा हुआ है। पेश हैं उनसे किए गए चुनिंदा सवालों के जवाब-

थियेटर से निकलता है फिल्मों का रास्ता



थियेटर के विकास में सरकार को गंभीर होना होगा

राज्य सरकार को रंगकर्म को लेकर गंभीर होना चाहिए। रंगकर्मियों के लिए कम से कम एक पुरस्कार तो होना ही चाहिए, ताकि कलाकारों का मोबाल बढ़े। अच्छे ऑडिटोरियम हीं और वे आसानी से उपलब्ध भी करें। यहाँ तभी मंच पर नई पीढ़ी आएंगी। अगर सरकार और समाज योड़ी और गंभीरता दिखाएं तो यह केवल एक नाटक की शुरुआत नहीं होती, बल्कि एक सप्तन की जीवित होना होता है। हमारे जैसे कलाकार उस सप्तन को जीतें और यह दिलाते हैं कि उत्तराखण्ड का रंगमंच भी नई चंद्राइयों को छू सकता है।



हर्षी उपाद्याय करन

हस्तानी

रंगत्रैषि श्रीश डोभाल का परिचय

15 भाषाओं में नाटकों का निर्देशन, कन्नड में अट नाटकों का मंचन, 35 से अधिक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय निर्देशकों के साथ काम और छह नाटकों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों में सफल मंचन, श्रीश डोभाल का यह सफर, उहाँ सब्दा रंगत्रैषि बनाता है।

राजस्थान के राज्यपाल द्वारा पद्म विभाग या गोल्डन अंचीवर्स अवॉर्ड उनकी उपलब्धियों में चार चांद लगाता है।

नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा (एनएसडी) से 1985 में स्नातक रेडी श्रीश डोभाल ने प्रधान द्वारा जी परिणति समेत नेशनल अवॉर्ड जीत युक्ती तीन फिल्मों के अलावा आसमा के केसे और खिलती कलियां जैसे दो दर्शन से अधिक टीटी धाराहिंकों के अलावा कई टीटीफिल्मों में अधिनयन किया है।

हाल ही में उहाँ रामगंभीर में उल्लेखनीय योगदान के लिए बवराज साहनी नेशनल अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। वह राजकुमार राव अधिनीत 'बधाई दो' फिल्म में भी नन्हा आयुक्त है। उनकी गढ़वाली फिल्म 'रेबार' 19 सितंबर को देश के प्रमुख शहरों और अमेरिका में रिलीज हुई है।



रंगकर्मी श्रीश डोभाल



शहर के बीचों-बीच स्थित घंटाघर

शहर के बीचों-बीच स्थित घंटाघर शहर की एक पहचान है। कभी घंटाघर के सम्मुखी की आवाज पर घूमने सोते और जगती था। घंटाघर को बलामपुर स्टेट रेलवे से जारी फिल्म के बाद उसकी बातों से बने इन दरों पर उकेरे गए बेलटूट की नवकाशी आकर्षण का केंद्रीय थी। दरों के बानों किनारे पर दो बड़ी मछलियों की तस्वीर उकेरी गई है। यह शाही चिह्न था।

इनकी भी अलग एक कहानी है। खतंत्रता के बाद सरकार ने इसी से राज चिह्न लिए जाने की बात कही जाती है। दरों की मरम्मत की चारकाशी और मछलियों की अपनी सासाकृति पहचान है। अब तो इनका क्षणांश हो रहा है, लेकिन किसी समय में यह शहर की शोभा थी। पिछले कुछ दिनों से पूर्णी तीनदरे की मरम्मत के साथ सजाया, संवाद और संरक्षित किया जा रहा है। बहाँ लगाए गए मजदूर बताते हैं कि इसे उसी पद्धति से बनाया जा रहा जैसे यह पहले बना था। उम्मीद है कि इसका आकर्षण फिर वापस लैटे।



खोता जा रहा है आकर्षण

नवाबी काल की इमारतें अब अवैध कब्जों और रखरखाव के भीतर से बनी हैं। इनका आकर्षण खोता जा रहा है। याहे वह गुलाबबाड़ी की दरों ही यह किसी भी दरों पर नहीं लगता। इसकी अवाज पूरे शहर को सुनाई देती थी। बाद में यह अपनी आभा खोता चला गया।



फिल्म और थियेटर में

जमीन-आसमान का अंतर

फिल्म में गलती सुधारने का मोकाहा होता है, थियेटर से होकर ही निकलता है। यहाँ अनुशासन, गहराई और मनुष्य की आत्मा तक पहुंचने की शक्ति मिलती है। अगर उत्तराखण्ड इसे आपा तो, तो यहाँ से भी अगली पीढ़ी के निर्मल पांडे जन्म ले सकते हैं। आज जब मंच पर परदे उठते हैं और रोशनी वेरे पर उड़ते हैं, तो यह केवल एक नाटक की शुरुआत नहीं होती, बल्कि एक सप्तन की जीवित होना होता है। हमारे जैसे कलाकार उस सप्तन को जीतें और यह दिलाते हैं कि उत्तराखण्ड का रंगमंच अपने असली रंगों की तलाश में

थियेटर से जीवन की आर्थिकी नहीं चलती

उत्तराखण्ड में कौन्सियल थियेटर का कोई ढांचा नहीं है। कलाकार और मंच से जुड़ा रहना चाहता है, तो उसे दुसरी आजीविका का सहाया होता है। जबकि महाराष्ट्र, गोवा या बालांग में यही थियेटर जीवन जीने का साधन है।

